National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(60): 270-274
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ० दीपक कुमार पाठक
सहा० आचार्य-संस्कृत विभाग,
नेहरु महाविद्यालय, ललितपुर,
उत्तर प्रदेश, भारत, 284403

Correspondence:
डॉ० दीपक कुमार पाठक
सहा० आचार्य-संस्कृत विभाग,
नेहरु महाविद्यालय, ललितपुर,
उत्तर प्रदेश, भारत, 284403

महाभारत में व्यूह– रचना : सामरिक, ऐतिहासिक एवं दार्शनिक अध्ययन

डॉ० दीपक कुमार पाठक

सार (Abstract)

महाभारत भारतीय परंपरा का विश्वकोशीय महाग्रंथ है, जिसमें युद्धनीति, राज्यशास्त्र, नैतिकता तथा दार्शनिक चिंतन का अद्वितीय समन्वय मिलता है। विशेषतः कुरुक्षेत्र युद्ध में प्रयुक्त विविध "व्यूह– रचनाएँ" प्राचीन भारतीय सैन्य– विज्ञान की उच्च विकसित अवस्था का प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। इस शोध– पत्र में व्यूह की व्युत्पत्ति, अक्षौहिणी सेना की गणितीय संरचना, प्रमुख व्यूहों का विश्लेषण, नेतृत्व– दक्षता, धर्मयुद्ध की अवधारणा, मनोवैज्ञानिक प्रभाव तथा आधुनिक सैन्य सिद्धांतों से तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तावना

महाभारत केवल धार्मिक आख्यान नहीं, बल्कि ऐतिहासिक– सांस्कृतिक दस्तावेज है, जिसमें युद्धनीति और सामरिक संगठन का विस्तृत वर्णन मिलता है। विशेषतः व्यूह– रचना के माध्यम से उस युग की सैन्य-रणनीति, संगठन क्षमता तथा युद्धकौशल की परिपक्वता स्पष्ट होती है। चक्रव्यूह, पद्मव्यूह आदि संरचनाएँ केवल सैनिक व्यवस्था नहीं, बल्कि सुविचारित रणनीतिक योजना के उदाहरण हैं। कुरुक्षेत्र में अठारह दिनों तक चले इस युद्ध में अठारह अक्षौहिणी सेनाएँ सम्मिलित थीं। इतनी विशाल सेना के संचालन हेतु वैज्ञानिक व्यूह– रचना अनिवार्य थी।

ऐतिहासिक दृष्टि से ये व्यूह प्राचीन भारतीय सैन्य-परंपरा और संगठित युद्ध-प्रणाली के विकास का संकेत देते हैं। वहीं दार्शनिक स्तर पर युद्धभूमि में रचित ये व्यूह धर्म और कर्तव्य के गूढ़ प्रश्नों से भी जुड़े हैं, जिनका प्रतिपादन भगवद्गीता में मिलता है।

अतः महाभारत में व्यूह– रचना का अध्ययन सामरिक, ऐतिहासिक तथा दार्शनिक—तीनों आयामों से भारतीय चिंतन की गहराई को समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

व्यूह शब्द की संकल्पना एवं व्युत्पत्ति

'व्यूह' शब्द संस्कृत धातु √ **ऊह (विचार, विन्यास, योजना करना)** से 'वि' उपसर्ग के योग से निर्मित माना जाता है। 'वि' उपसर्ग का अर्थ है—विशेष रूप से, पृथक-पृथक या व्यवस्थित रूप में; और 'ऊह' का आशय है—विचार करना, संयोजन करना या विन्यास करना। इस प्रकार *व्यूह* का शाब्दिक अर्थ हुआ—**विशेष प्रकार से किया गया विन्यास या सुव्यवस्थित संयोजन**।

सामान्यतः 'व्यूह' का प्रयोग किसी वस्तु, दल या शक्ति के योजनाबद्ध क्रमबद्ध संगठन के अर्थ में होता है। वैदिक एवं उत्तरवैदिक साहित्य में यह शब्द व्यवस्था, समूह-निर्माण अथवा क्रमबद्ध संरचना के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

महाभारत में ‘व्यूह’ विशेष रूप से सैन्य-संगठन के संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है-“**तस्मिन् व्यूहेषु सेनायाः व्यवस्थिताः महारथाः सन्ति।**”[1] यहाँ यह सेना की ऐसी सामरिक रचना को सूचित करता है जिसमें रथ, अश्व, गज और पदाति को निश्चित योजना के अनुसार सजाया जाता है। यह केवल सैनिकों की पंक्तिबद्ध स्थिति नहीं, बल्कि युद्धनीति, भूगोल, शत्रु-शक्ति और उद्देश्य को ध्यान में रखकर निर्मित रणनीतिक संरचना है।

अतः संकल्पनात्मक रूप से ‘व्यूह’ का अर्थ है—योजनापूर्वक किया गया ऐसा विन्यास, जो किसी लक्ष्य की सिद्धि के लिए सामूहिक शक्ति को संगठित और निर्देशित करता है। सैन्य संदर्भ में यह रणनीतिक बुद्धिमत्ता और संगठनात्मक कौशल का प्रतीक है।

अक्षौहिणी शब्द की व्युत्पत्ति तथा सेना की संरचना

‘अक्षौहिणी’ शब्द संस्कृत का सामरिक पद है। इसकी व्युत्पत्ति के संबंध में आचार्यों ने भिन्न मत प्रस्तुत किए हैं, पर सामान्यतः इसे अक्षौहिण शब्द का स्त्रीलिंग रूप माना जाता है। ‘अक्ष’ का अर्थ रथ (धुरी/पहिया) तथा ‘ओहिण/औहिण’ का आशय समूह या संचय से जोड़ा जाता है। इस प्रकार **अक्षौहिणी** का अर्थ हुआ—रथों एवं अन्य सैन्य इकाइयों से युक्त विशाल संगठित सेना-समूह।

महाभारत में यह शब्द पूर्ण विकसित और मानकीकृत सैन्य-संगठन के लिए प्रयुक्त हुआ है। यह किसी सामान्य सेना का नहीं, बल्कि निश्चित गणनात्मक अनुपात में व्यवस्थित एक विशाल युद्ध-दल का द्योतक है- **“अक्षौहिण्यो द्विजश्रेष्ठाः”**[2]

संरचना (Composition)

महाभारत के अनुसार एक अक्षौहिणी सेना चार अंगों से मिलकर बनती है। **एको रथः एको गजः । त्रयः अश्वाः पञ्च पादातयः॥**[3]—

- **रथ (chariot corps)**
- **गज (हाथी सेना) (Elephant Corps)**
- **अश्व (घुड़सवार सेना) (Horse Corps)**
- **पदाति (पैदल सैनिक) (Infantry Corps)**

इनका निश्चित अनुपात इस प्रकार है:

टक	**संख्या**
थ	21,870
ज	21,870
श्व	65,610
दाति	109,350

इस प्रकार एक अक्षौहिणी में कुल सैनिक संख्या 218,700 मानी गई है। इनका अनुपात: 1:1:3:5 का होता था। यह “चतुरंगिणी सेना” की अवधारणा थी। यह गणितीय संतुलन प्राचीन भारतीय सैन्य संगठन की वैज्ञानिकता को सिद्ध करता है।

युद्ध में अक्षौहिणी का प्रयोग

महाभारत युद्ध में कौरवों की ओर 11 अक्षौहिणी तथा पाण्डवों की ओर 7 अक्षौहिणी सेना संगठित थी। इससे स्पष्ट है कि उस युग में महाभारत युद्ध में कुल अट्टाराह अक्षौहिणी सेना ने युद्ध किया था- **एतया संख्यया ह्यासन्कुरुपाण्डवसेनयोः। अक्षौहिण्यो द्विजश्रेष्ठाः पिण्डेनाष्टादशैव ताः॥**[4] यह गणना मात्र संख्यात्मक मात्र नहीं, बल्कि गणितीय एवं योजनाबद्ध व्यवस्था पर आधारित था।

सामरिक महत्त्व

अक्षौहिणी की यह संरचना प्राचीन भारतीय सैन्य-व्यवस्था की सुविकसित प्रणाली को दर्शाती है। चतुर्मुखी सेना (चतुरंगिणी सेना) का सिद्धांत—रथ, गज, अश्व, पदाति—रणनीतिक संतुलन और युद्धक लचीलेपन का परिचायक है।

अतः अक्षौहिणी केवल विशाल सेना का नाम नहीं, अपितु एक सुव्यवस्थित, गणनात्मक और संगठित सामरिक इकाई थी, जो महाभारतकालीन युद्धनीति की उच्च परिपक्वता को प्रकट करती है।

महाभारत के प्रमुख व्यूह

महाभारत में वर्णित व्यूह– रचनाएँ प्राचीन भारतीय युद्धनीति की उन्नत सामरिक संरचनाओं का परिचय देती हैं। इनमें से प्रमुख व्यूह निम्नलिखित हैं—

1. **चक्रव्यूह-** –

महाभारत में वर्णित चक्रव्यूह अत्यंत जटिल एवं गतिशील सैन्य संरचना थी, जिसमें सेना को वृत्ताकार तथा परस्पर घूर्णनशील पंक्तियों में व्यवस्थित किया जाता था। इसकी विशेषता यह थी कि बाहरी परतों को भेदने के बाद भी योद्धा क्रमशः आंतरिक घेरों में उलझता चला जाता था, जिससे बाहर निकलना अत्यंत कठिन हो जाता था। यह व्यूह शत्रु को भ्रमित कर उसे अलग-थलग करने की रणनीति पर आधारित था। महाभारत युद्ध में इसका सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रसंग अभिमन्यु से संबंधित है, जिसने इसमें प्रवेश तो किया, पर पूर्ण विधि न जानने के कारण बाहर नहीं निकल सका। चक्रव्यूह प्राचीन भारतीय युद्धनीति की गणनात्मक योजना, सामरिक कौशल और मनोवैज्ञानिक रणनीति का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसका वर्णन करते हुए संजय कहते हैं कि-

> **चक्रव्यूहो महाराज आचार्येण अभिकलितः।**
> **तत्र शक्रोपमा: सर्वे राजाः विनिवेशिताः॥**[5]

2. **पद्मव्यूह (कमलव्यूह)** –

महाभारत में वर्णित पद्मव्यूह कमल के आकार पर आधारित एक बहुस्तरीय सामरिक संरचना थी, जिसमें सेना को इस प्रकार विन्यस्त किया जाता था कि उसका मध्य भाग अत्यंत सुरक्षित और सुदृढ़ रहे तथा बाह्य पंखुड़ियों के समान फैलाव शत्रु को चारों ओर से घेरने में सक्षम हो। इस व्यूह में प्रमुख योद्धा केंद्र में स्थित रहते थे, जबकि बाहरी परतों में रथ, गज, अश्व और पदाति क्रमशः सुरक्षा एवं आक्रमण की भूमिका निभाते थे। इसकी विशेषता यह थी कि शत्रु यदि बाहरी स्तर को भेद भी दे, तो उसे भीतर की प्रत्येक परत से क्रमशः संघर्ष करना पड़ता था। इस प्रकार पद्मव्यूह रक्षा और आक्रमण—

दोनों की संतुलित रणनीति का द्योतक था तथा युद्धभूमि में संगठन, अनुशासन और सामरिक दूरदर्शिता का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है-

पद्मव्यूहो महाराज आचार्येणाभिकल्पितः।
तत्र पद्मोपमाः सर्वे राजानो विनिवेशिताः॥[6]

3. गरुड़व्यूह-

महाभारत में वर्णित यह व्यूह गरुड़ (विशाल पक्षी) के आकार पर आधारित एक आक्रामक सामरिक संरचना थी। इसमें अग्रभाग (चोंच) में श्रेष्ठ और प्रहारक योद्धाओं को रखा जाता था, जो शत्रु-सेना पर सीधा आक्रमण करते थे; दोनों पार्श्व (पंख) विस्तृत होकर शत्रु को घेरने का कार्य करते थे, तथा मध्य एवं पश्चभाग में संरक्षक और सहायक सेना रहती थी। यह व्यूह तीव्र आक्रमण, व्यापक घेराबंदी और रणनीतिक लचीलेपन का संगठित रूप था, जो उस काल की उच्च कोटि की सैन्य-योजना और नेतृत्व-कौशल को प्रदर्शित करता है।

4. मकरव्यूह-

महाभारत में वर्णित **मकरव्यूह** मकर (जलचर प्राणी) के आकार पर आधारित एक सामरिक रचना थी, जिसका उपयोग प्रायः शत्रु को भ्रमित कर अचानक प्रहार करने के उद्देश्य से किया जाता था। इसकी संरचना में अग्रभाग को तीक्ष्ण एवं शक्तिशाली रखा जाता था, जो मकर के मुख के समान शत्रु पर आक्रमण करता था, जबकि मध्य और पार्श्व भाग अपेक्षाकृत विस्तृत एवं संतुलित होते थे, जिससे आवश्यकता पड़ने पर सेना को फैलाया या समेटा जा सके। यह व्यूह विशेषतः गतिशील युद्ध-परिस्थितियों में प्रभावी माना जाता था, जहाँ शत्रु की पंक्तियों को भेदकर भीतर प्रवेश करना और फिर चारों ओर से घेराव करना लक्ष्य होता था। इस प्रकार मकरव्यूह आक्रामक चातुर्य, लचीली रणनीति और योजनाबद्ध सैन्य-संगठन का द्योतक है-

छष्ठे दिने क्रौरव्याः मकरव्यूहेण च युधि प्रतिष्ठिताः।[7]

5. शंखव्यूह-

महाभारत में वर्णित शंखव्यूह शंख के आकार पर आधारित एक सुव्यवस्थित सामरिक संरचना थी, जिसमें सेना का अग्रभाग क्रमशः संकुचित और पश्चभाग विस्तृत रखा जाता था। इस विन्यास का उद्देश्य शत्रु को एक सीमित मार्ग में आकर्षित कर नियंत्रित करना तथा आवश्यकता पड़ने पर व्यापक पार्श्व-प्रहार करना था। इसकी घुमावदार संरचना शत्रु को भ्रमित करने के साथ-साथ रक्षात्मक सुरक्षा भी प्रदान करती थी। शंखव्यूह आक्रमण और रक्षा—दोनों परिस्थितियों में उपयोगी माना जाता था और यह महाभारतकालीन सैन्य-रणनीति की योजनाबद्धता तथा संतुलित युद्धक दृष्टि का परिचायक है।

6. सूचीव्यूह–

महाभारत में वर्णित सूचीव्यूह (सूई के आकार का व्यूह) एक तीक्ष्ण एवं भेदनात्मक सैन्य संरचना थी, जिसका अग्रभाग अत्यंत संकीर्ण और नुकीला तथा पश्चभाग क्रमशः विस्तृत होता था। इसका प्रमुख उद्देश्य शत्रु– सेना की सघन पंक्तियों को एक बिंदु पर केंद्रित प्रहार द्वारा भेदना था। इस व्यूह में अग्रभाग में पराक्रमी एवं तीव्रगामी योद्धाओं को रखा जाता था, जो शत्रु की पंक्ति में छिद्र उत्पन्न करते थे, जबकि पीछे की सेना उस मार्ग को विस्तृत कर निर्णायक आक्रमण करती थी। सूचीव्यूह सामरिक दृष्टि से आक्रामक रणनीति का प्रतीक था और यह दर्शाता है कि महाभारतकालीन युद्धनीति में केंद्रित शक्ति-प्रयोग और योजनाबद्ध भेदन-कौशल का विशेष महत्व था।

7. वज्रव्यूह–

महाभारत में वर्णित वज्रव्यूह एक अत्यंत सुदृढ़ और अभेद्य सामरिक रचना थी, जिसका नाम 'वज्र' अर्थात् इन्द्र के अजेय अस्त्र के प्रतीक से लिया गया है। यह व्यूह सामान्यतः हीरे या कोणयुक्त संरचना के समान निर्मित किया जाता था, जिसमें मध्यभाग में प्रमुख सेनानायक एवं श्रेष्ठ योद्धा स्थित रहते थे तथा उनके चारों ओर सशक्त सुरक्षा-विन्यास स्थापित किया जाता था। अग्रभाग में आक्रमणकारी दल, पार्श्वों में संतुलनकारी सेना और पश्चभाग में संरक्षक दल नियुक्त रहता था, जिससे यह व्यूह आक्रमण और रक्षा दोनों में सक्षम बनता था। वज्रव्यूह का मुख्य उद्देश्य शत्रु के प्रबल प्रहार को विफल करना, सेना की एकता बनाए रखना और अवसर मिलने पर संगठित प्रतिआक्रमण करना था; इस प्रकार यह व्यूह महाभारतकालीन युद्धनीति की दृढ़ता, अनुशासन और रणनीतिक परिपक्वता का द्योतक है।

वज्रो नामैष तु व्यूहो दुर्भिदः सर्वतोमुखः ।
चापविद्युद्ध्वजो घोरो गुप्तो गाण्डीवधन्वना ॥[8]

इन व्यूहों से स्पष्ट होता है कि महाभारतकालीन युद्ध केवल बल-प्रदर्शन नहीं था, बल्कि सुविचारित रणनीति, गणनात्मक संगठन और सामरिक दूरदर्शिता पर आधारित था। व्यूह– रचना उस युग की सैन्य-प्रतिभा और संगठन-कौशल का प्रमाण है।

व्यूह और नेतृत्व

महाभारत में व्यूह– रचना केवल सैनिक व्यवस्था नहीं, बल्कि प्रभावी नेतृत्व की कसौटी भी थी। किसी भी व्यूह की सफलता सेनापति की दूरदर्शिता, निर्णय-क्षमता और युद्धभूमि की परिस्थिति के यथार्थ आकलन पर निर्भर करती थी। भीष्म, द्रोण, कर्ण तथा अर्जुन जैसे योद्धा न केवल पराक्रमी थे, बल्कि कुशल रणनीतिकार भी थे, जो शत्रु की शक्ति, भू-स्थितियों और समय के अनुसार व्यूह का निर्माण एवं परिवर्तन कर सकते थे। नेतृत्व का दायित्व केवल आदेश देना नहीं, बल्कि समस्त सेना में अनुशासन, समन्वय और मनोबल बनाए रखना भी था। इस प्रकार व्यूह और नेतृत्व परस्पर पूरक थे—सुदृढ़ व्यूह के लिए सक्षम नेतृत्व आवश्यक था, और प्रभावी नेतृत्व के लिए सुविचारित व्यूह अनिवार्य-

चक्रं व्यूढं महाबाहो द्रोणेनामिततेजसा॥[9]

भीष्म की रणनीति

महाभारत के कुरुक्षेत्र युद्ध में भीष्म पितामह कौरव सेना के प्रथम प्रधान सेनापति थे। उनकी रणनीति का मूल आधार था—अनुभव, संतुलन और अनुशासन। उन्होंने विशाल कौरव सेना (११ अक्षौहिणी)

को संगठित रखने के लिए विविध व्यूह– रचनाओं का प्रयोग किया और प्रतिदिन युद्ध की परिस्थिति के अनुसार उनका परिवर्तन किया।

भीष्म की सामरिक दृष्टि रक्षात्मक– आक्रामक संतुलन पर आधारित थी। वे सीधे निर्णायक आक्रमण की अपेक्षा शत्रु की शक्ति को क्रमशः क्षीण करने की नीति अपनाते थे। उन्होंने पाण्डवों की युद्ध-शक्ति का केंद्र अर्जुन को माना, इसलिए उनके विरुद्ध विशेष व्यूह-व्यवस्था की जाती थी। साथ ही, उन्होंने सेना के अग्रभाग में प्रबल योद्धाओं को और मध्य में सुरक्षित संरचना रखकर संतुलित प्रहार की योजना बनाई।

यद्यपि भीष्म व्यक्तिगत रूप से पाण्डवों के प्रति स्नेह रखते थे, फिर भी कौरव सेनापति के रूप में उन्होंने अपने कर्तव्य का पालन किया। उनकी रणनीति में अनुशासन, संगठन और युद्ध-नीति की गहरी समझ परिलक्षित होती है। इस प्रकार भीष्म की युद्धनीति महाभारतकालीन सामरिक परिपक्वता और नेतृत्व-कौशल का उत्कृष्ट उदाहरण है-

अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः।
भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवन्तः सर्व एव हि॥[10]

द्रोणाचार्य की सामरिक दक्षता

महाभारत में द्रोणाचार्य केवल महान आचार्य ही नहीं, बल्कि अत्यंत कुशल सैन्य रणनीतिकार भी थे। वे जटिल व्यूह– रचनाओं के प्रकाण्ड ज्ञाता माने जाते थे और परिस्थिति के अनुसार सेना का संयोजन करने में अद्वितीय दक्षता रखते थे। उनकी विशेषता यह थी कि वे शत्रु की चालों का सूक्ष्म आकलन कर उसके अनुकूल व्यूह का निर्माण करते थे-

चक्रं व्यूहमसंस्थाप्य द्रोणो राज्ञः हिते रतः।
अजेयं सर्वसैन्यानां व्यूहं व्यूढ्वा व्यवस्थितः॥[11]

चक्रव्यूह की रचना और संचालन उनकी उत्कृष्ट सामरिक क्षमता का प्रमाण है। यह बहुस्तरीय एवं गतिशील व्यूह शत्रु को क्रमशः भीतर खींचकर अलग-थलग कर देता था। द्रोणाचार्य ने इसका प्रयोग रणनीतिक उद्देश्य—विशेषतः युधिष्ठिर को बंदी बनाने—के लिए किया। इससे स्पष्ट होता है कि उनकी युद्धनीति केवल बल-प्रदर्शन नहीं, बल्कि लक्ष्य-केन्द्रित और योजनाबद्ध थी-

चक्रं व्यूहमसंस्थाप्य द्रोणो राज्ञः हिते रतः।
अजेयं सर्वसैन्यानां व्यूहं व्यूढ्वा व्यवस्थितः॥[12]

अतः द्रोणाचार्य की सामरिक दक्षता महाभारतकालीन युद्ध-विज्ञान की उच्च विकसित परंपरा को उद्घाटित करती है।

व्यूह और मनोविज्ञान

महाभारत में व्यूह– रचना केवल सामरिक व्यवस्था नहीं थी, बल्कि गहन मनोवैज्ञानिक रणनीति का भी अंग थी। सुव्यवस्थित और विशाल व्यूह शत्रु के मन में भय और अस्थिरता उत्पन्न करते थे, जिससे उसका मनोबल प्रारम्भ में ही विचलित हो सकता था- **"व्यवस्थितं महद् सैन्यं दृष्ट्वा संत्रस्तमानसाः..."** दूसरी ओर, अपने पक्ष की सेना में स्पष्ट संरचना और निश्चित स्थान-निर्धारण अनुशासन को सुदृढ़ करता था तथा सैनिकों में कर्तव्य-बोध और आत्मविश्वास बनाए रखता था। व्यूह मनोबल की स्थिरता के साधन भी थे, क्योंकि सैनिक जानते थे कि वे किसी सुविचारित योजना का अंग हैं। साथ ही, अनेक व्यूह प्रतीकात्मक अर्थ भी रखते थे—गरुड़व्यूह शक्ति और तीव्रता का प्रतीक, पद्मव्यूह संतुलन और केंद्रित ऊर्जा का द्योतक, तथा वज्रव्यूह अभेद्यता और दृढ़ता का संकेत था। इस प्रकार व्यूह बाह्य युद्ध-रचना के साथ-साथ आंतरिक मनोबल और मानसिक प्रभाव की भी प्रभावी रणनीति थे।

धर्मयुद्ध की अवधारणा

महाभारत में युद्ध को मात्र सत्ता-संघर्ष न मानकर **धर्मयुद्ध** के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जहाँ उद्देश्य अन्याय का प्रतिरोध और धर्म की स्थापना है। इसी संदर्भ में भगवद्गीता में श्रीकृष्ण अर्जुन को कर्तव्यपालन हेतु युद्ध का उपदेश देते हैं—यह प्रतिपादित करते हुए कि क्षत्रिय के लिए धर्मसम्मत युद्ध से विमुख होना उचित नहीं।

धर्मयुद्ध की संकल्पना के अंतर्गत युद्ध– नियमों का पालन अनिवार्य था—जैसे समान आयुध वाले से ही युद्ध करना, निहत्थे या शरणागत पर आक्रमण न करना, तथा सूर्यास्त के बाद युद्ध स्थगित करना। इन नियमों का उद्देश्य युद्ध को नैतिक मर्यादा में रखना था-

रथी रथेन योद्धव्यो गजेनेव गजः समम्।
अश्वेनाश्वो नरः पद्भ्यां इति धर्मः सनातनः॥[13]
न चासन्नद्धमासीनं न निर्बन्धं न चायुधम्।
नाभिपन्नं न भीतं वा धर्मेणैव प्रहारयेत्॥[14]
न शरणागतं हन्याद् न निष्क्रान्तं रणाजिरात्।
न निर्वाणं न शस्त्रं च त्यक्तायुधमचेतनम्॥[15]
अस्तं गते दिवाकरे निवर्तन्ते स्म सैनिकाः।
पुनः प्रभाते युध्यन्ते नियमं कृत्वा पार्थिवाः॥[16]

किन्तु अभिमन्यु– वध के प्रसंग में इन मर्यादाओं का उल्लंघन हुआ, जब अनेक महारथियों ने मिलकर अकेले और आंशिक रूप से निहत्थे अभिमन्यु पर आक्रमण किया। यह घटना धर्मयुद्ध की आदर्श संकल्पना और व्यवहारिक युद्ध-राजनीति के मध्य उत्पन्न नैतिक द्वंद्व को स्पष्ट करती है- **अधर्मेण हतो बालः बहुभिर्वीरसत्तमैः॥**[17]

तुलनात्मक अध्ययन

प्राचीन विश्व की विभिन्न सभ्यताओं में युद्ध-संरचनाओं का विकास हुआ, जिनमें सामरिक दृष्टि से उल्लेखनीय भिन्नताएँ पाई जाती हैं। यूनान में प्रयुक्त **फालैन्क्स** विशेषतः एथेंस जैसे नगर-राज्यों में सघन एवं सन्नद्ध पंक्तियों की संरचना थी, जिसमें सैनिक ढाल और भालों के साथ एक घनी दीवार के रूप में आगे बढ़ते थे। यह सामूहिक अनुशासन और रक्षात्मक शक्ति का उदाहरण थी।

रोमन साम्राज्य की **लीजन** व्यवस्था, जो रोम की सैन्य-शक्ति का आधार थी, अपेक्षाकृत अधिक लचीली आयताकार संरचना पर आधारित थी। इसमें छोटे-छोटे दलों (कोहोर्ट) के माध्यम से युद्धभूमि में त्वरित पुनर्संयोजन और सामरिक अनुकूलन संभव था।

इसके विपरीत महाभारत में वर्णित भारतीय व्यूह केवल रेखीय या आयताकार गठन तक सीमित नहीं थे; वे चक्र, पद्म, गरुड़, वज्र आदि

विविध आकृतियों में निर्मित होते थे। ये संरचनाएँ अधिक गतिशील, बहुस्तरीय और प्रतीकात्मक अर्थों से युक्त थीं, जिनमें सामरिक योजना के साथ सांस्कृतिक एवं दार्शनिक आयाम भी निहित थे। इस प्रकार भारतीय व्यूह– रचना तुलनात्मक दृष्टि से अधिक रूपात्मक विविधता और मनोवैज्ञानिक प्रभावशीलता का परिचय देती है।

वैज्ञानिक विश्लेषण

महाभारत में वर्णित व्यूह– रचनाओं का अध्ययन केवल ऐतिहासिक या साहित्यिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य से भी किया जा सकता है।

ज्यामितीय संरचना के स्तर पर चक्र, पद्म, वज्र, सूची आदि व्यूह स्पष्ट रूप से वृत्त, कमलाकार, हीरकाकार अथवा शंक्वाकार विन्यास पर आधारित थे। इससे संकेत मिलता है कि युद्धभूमि में आकृतियों का चयन स्थानिक संतुलन, घेराबंदी और आक्रमण– दिशा को ध्यान में रखकर किया जाता था।

गणितीय अनुपात की दृष्टि से अक्षौहिणी जैसी सैन्य-इकाइयों का निश्चित संख्यात्मक विन्यास इस बात का प्रमाण है कि सेना-संगठन में परिमाण, संतुलन और गणना का विशेष महत्व था। विभिन्न अंगों—रथ, गज, अश्व और पदाति—का निश्चित अनुपात सामरिक संतुलन बनाए रखने के लिए निर्धारित किया जाता था।

संकेत– प्रणाली (Communication System) भी व्यूह संचालन का महत्वपूर्ण पक्ष था। शंख, ध्वज, नगाड़े और ध्वनि– संकेतों के माध्यम से सेना को दिशा-निर्देश दिए जाते थे, जिससे विशाल सेना में समन्वय बना रहे।

अंततः **नेतृत्व– आधारित नियंत्रण** व्यूह की सफलता का मूल तत्व था। सेनापति की स्थिति, उसके संकेत और परिस्थितियों के अनुसार त्वरित निर्णय ही व्यूह को प्रभावी बनाते थे। इस प्रकार व्यूह– रचना में ज्यामिति, गणित, संचार– प्रणाली और नेतृत्व—इन सभी का समन्वित वैज्ञानिक आधार निहित था।

दार्शनिक आयाम

महाभारत में व्यूह– रचना केवल युद्ध-तकनीक नहीं, बल्कि एक गहन दार्शनिक प्रतीक के रूप में भी समझी जा सकती है। व्यूह समाज की संरचना का द्योतक है, जहाँ विभिन्न वर्ग, भूमिकाएँ और शक्तियाँ एक नियोजित क्रम में स्थित होकर सामूहिक लक्ष्य की सिद्धि हेतु कार्य करती हैं। जिस प्रकार व्यूह में रथ, गज, अश्व और पदाति का संतुलित संगठन आवश्यक है, उसी प्रकार समाज में विविध अंगों का समन्वित सहयोग ही स्थिरता और उन्नति का आधार बनता है।

व्यूह यह भी संकेत करता है कि किसी एक अंग की दुर्बलता संपूर्ण संरचना को प्रभावित कर सकती है। अतः विजय केवल व्यक्तिगत पराक्रम से नहीं, बल्कि समन्वय, अनुशासन और परस्पर विश्वास से संभव होती है। इस दृष्टि से व्यूह सामूहिक उत्तरदायित्व, कर्तव्य-बोध और सामाजिक एकता का दार्शनिक प्रतिरूप है।

आधुनिक सैन्य– सिद्धांत से साम्य

महाभारत में वर्णित व्यूह– रचनाएँ केवल प्राचीन युद्धनीति तक सीमित नहीं थीं, बल्कि आधुनिक सैन्य सिद्धांतों के कई पहलुओं से साम्य रखती हैं। उदाहरणतः **चक्रव्यूह** की घूर्णनात्मक और घेराबंदी-प्रधान संरचना आधुनिक युद्धशास्त्र में प्रयुक्त **Encirclement (परिधिवलन)** की रणनीति के समान है, जिसमें शत्रु को चारों ओर से घेरकर उसके प्रहार और पलायन की क्षमता सीमित की जाती है।

इसी प्रकार **श्येनव्यूह** की तेज और आक्रामक गति आधारित संरचना आधुनिक **Blitzkrieg (ताक़तवर एवं तीव्र आक्रमण)** की रणनीति से तुल्य है, जिसमें गति, आश्चर्य और केंद्रित प्रहार के माध्यम से शत्रु की रक्षात्मक क्षमता को जल्दी समाप्त किया जाता है।

इस प्रकार महाभारतकालीन व्यूह– रचना में न केवल गणितीय और सामरिक बुद्धिमत्ता निहित है, बल्कि आधुनिक युद्धशास्त्र के सिद्धांतों के समान तात्कालिक निर्णय, गति और प्रभावपूर्ण नियंत्रण की भी झलक मिलती है।

निष्कर्ष

महाभारत की व्यूह– रचना केवल प्राचीन युद्ध-व्यवस्था का विवरण नहीं, बल्कि **वैज्ञानिक, रणनीतिक, मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक**—इन चारों स्तरों पर परिपक्व सैन्य– विज्ञान का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसकी गणितीय और ज्यामितीय संरचना युद्धनीति की वैज्ञानिक समझ को दर्शाती है, जबकि विभिन्न व्यूहों का चयन और संचालन रणनीतिक कौशल का प्रमाण है। व्यूहों के प्रभाव से शत्रु में भय उत्पन्न होता और सैनिकों में अनुशासन और मनोबल स्थिर रहता है, जो मनोवैज्ञानिक दृष्टि को दर्शाता है। साथ ही, व्यूह समाज और सामूहिक समन्वय का प्रतीक होकर दार्शनिक आयाम प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार महाभारत में व्यूह– रचना प्राचीन भारतीय सैन्य-बुद्धि की गहनता और परिपक्वता का समग्र प्रमाण है।

संदर्भ– सूची

[1] महाभारत, भीष्मपर्व, श्लोक 17/21

[2] महाभारत, आदिपर्व, श्लोक 2/24

[3] महाभारत, आदिपर्व, श्लोक 2/15-23

[4] महाभारत, आदिपर्व, श्लोक 2/24

[5] महाभारत, द्रोणपर्व, श्लोक 7 /33/12

[6] महाभारत, द्रोणपर्व, श्लोक 5 /100/2

[7] महाभारत, भीष्मपर्व, श्लोक 75/1/23

[8] महाभारत, द्रोणपर्व, अध्याय 19, श्लोक 34

[9] महाभारत, द्रोणपर्व, अध्याय 2

[10] महाभारत, भीष्मपर्व 1/12

[11] महाभारत, द्रोणपर्व 2/3

[12] महाभारत, द्रोणपर्व 8/12

[13] महाभारत, भीष्म-पर्व 1/26

[14] महाभारत, भीष्म-पर्व 1/27

[15] महाभारत, भीष्म-पर्व 1/28

[16] महाभारत, भीष्मपर्व 1/29

[17] महाभारत, द्रोणपर्व 49